B.M.A. College, [illegible]

Date: 08/07/2020

B.A. (Hons) - Part - I

Paper - II

Deptt :- Sociology

By: Dr. Rajesh Kumar
Sociology

विषय : कॉम्ट का सामाजिक स्थिति एवं गतिकी

अगस्त कॉम्ट ने समाजशास्त्र को दो प्रमुख भागों में बाँटा है 1. स्थितिविज्ञान एवं 2. गतिकी विज्ञान, जिनकी चर्चा की जा रही है।

1. सामाजिक स्थिति विज्ञान :- यह समाजशास्त्र की वह शाखा है जो सामाजिक संरचना का अध्ययन करती है। इसके अन्तर्गत सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न अंगों, क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं के नियमों आदि को ध्यान दिया जाता है। कॉम्ट का मत है कि समाज के स्थिर एवं सन्तुलन एवं शांतिपूर्ण व्यवस्था के लिए समाज के समस्त अंगों में एकमतता का होना आवश्यक है। उनका यह भी मत है कि समाज विभिन्न अंगों से निर्मित एक ऐसी शारीरिक रचना है जिसमें संतुलन बना रहना आवश्यक है और यह सन्तुलन तभी कायम रह सकता है जबकि समाज की विभिन्न इकाइयों में परस्पर विरोध एवं संघर्ष के स्थान पर समन्वय, अन्तःनिर्भरता और सामंजस्य हो। साथ ही व्यक्ति में बौद्धिक एवं नैतिक एकसमानता की भावना भी हो। यह उन सामाजिक स्थिरता के नियमों की भी खोज करता है जो सामाजिक स्थिरता के लिए उत्तरदायी हो।

2. सामाजिक गतिकी विज्ञान : यह विज्ञान सामाजिक विकास एवं प्रगति का अध्ययन करता है। कॉम्ट के अनुसार, "यह समाज के आवश्यक तथा निरंतर गतिमानता की क्रिया का विज्ञान है।" सोरोकिन के अनुसार, "सामाजिक गतिकी विज्ञान प्रगति के नियमों पर विचार करता है। इसमें वह नियम आते हैं जिनके अनुसार समाज का क्रमिक विकास और परिवर्तन होता है।" कॉम्ट सामाजिक गति को एक निरन्तर प्रक्रिया मानते हैं। यह विज्ञान यह अध्ययन करता है कि मानव किन अवस्थाओं से होकर वर्तमान अवस्था तक पहुँचा है, किन्तु यह सामाजिक भविष्य को भी बताने का काम करता है। इनका कहना है कि मानव समाज के विकास और क्रमिक आधार पर ही प्रगति करता है। इसलिए इसके अन्तर्गत उन नियमों को खोजा जाता है जो मानव में संशोधन एवं संवर्धन करते हैं एवं मानव विकास की दिशा तय करते हैं। यह इतिहास से उन तथ्यों का संकलन करता है।